14. दोहे

का बरपा जब कृपि सुखाने।
समय चूकि पूनि का पछिताने।।

तुलसी इह संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिल-मिल चलिए, नदी-नाव संजोग।।

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

बड़े बड़ाई न करे, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाई।
रहिमन सींचे मूल को, फुलई फलई अघाइ।।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।।

करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

– तुलसी, रहीम, कबीर

शब्दार्थ

सरिस	–	समान, बराबर
सम	–	समान, बराबर
अधमाई	–	पाप
विपदा	–	संकट, मुसीबत
अघाना	–	पेट भर खाना
साधना	–	अभ्यास करना, प्रयास करना
जड़मति	–	मूर्ख
सुजान	–	चतुर
सिल	–	पत्थर
संजोग	–	मेल

बातचीत के लिए

1. आप संकट में सहायता के लिए किनके-किनके पास जाते हैं?
2. कोई काम आपको अच्छी तरह आ जाए इसके लिए आप क्या करते हैं?
3. एक साथ कई काम करने पर काम सही ढंग से नहीं हो पाता है। काम सही हो इसके लिए क्या करना चाहिए?
4. हमारा सच्चा मित्र या शुभचिंतक कौन है, इसका पता कब चलता है?
5. किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने समय पर काम नहीं किया और आपको नुकसान हुआ हो।

पाठ में से

1. वर्षा के बहुत ज्यादा या कम होने से क्या-क्या नुकसान होता है?
2. किसे सबसे अच्छा कार्य कहा गया है?
3. विपत्ति से हमें क्या पता चलता है?

आपकी समझ से

1. आप अपने इन मित्रों को कौन-सा दोहा सुनाकर समझाएँगे-

(क) जो झगड़ते रहते हैं।

(ख) जो अपनी बड़ाई खुद करते हैं।

(ग) जो घमंड करते हैं।

2. पाठ के अनुसार सूची बनाइए –

(क) जो काम हमें करने चाहिए।

(ख) जो काम हमें नहीं करने चाहिए।

3. 'दोहावली' पाठ में तुलसी, रहीम और कबीर के तीन-तीन दोहे दिए गए हैं। इनमें से रहीम के दोहे पहचानकर लिखिए। यह भी बताइए कि आपने इन्हें कैसे पहचाना।

भाषा के नियम

1. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के विपरीत अर्थ वाले शब्द से वाक्य को पूरा कीजिए –

(क) हमें न तो बहुत <u>अधिक</u> बोलना चाहिए न ही बहुत ....।

(ख) हम सबको <u>दोस्त</u> बनाएँ न कि ....।

(ग) विपत्ति में <u>अपने</u> और .... की पहचान हो जाती है।

(घ) हमें एक समय में <u>एक</u> ही काम पर ध्यान देना चाहिए न कि .... कामों पर।

(ङ) बार-बार अभ्यास करने से <u>मूर्ख</u> भी .... बन सकता है।

(च) दूसरों को कष्ट पहुँचाना <u>पाप</u> है जबकि दूसरों की सहायता करना ....।

2. दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

- संसार – ....
- पछताना – ....
- विपदा – ....
- अभ्यास – ....

3. नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए –

- बरषा – ....
- सरिस – ....
- अधमाई – ....
- जड़मति – ....
- रसरी – ....
- पंछी – ....

शब्दों की दुनिया

1. नीचे कृषि और वर्षा से जुड़े शब्दों को लिखें–

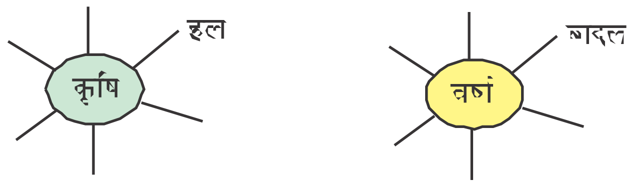

यह भी बताइए कि क्या कृषि और वर्षा में कोई जुड़ाव हो सकता है? कैसे ?

2. **नीचे दिए गए शब्दों से दो-दो नए शब्द बनाइए –**

- हित – ....
- बड़ा – ....
- सम – ....

कुछ करने के लिए

1. पाठ में दिए गए दोहों के अलावा कुछ दोहे ढूँढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

आपकी कल्पना

1. चित्र में आदमी ने क्या कहा होगा?

15. चिट्ठी आई है

प्रिय सहेली बेबी,
नमस्ते ।

भगवानपुरहाट
08/11/11

कैसे ?

आज तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बिहार में होने वाले छठ पर्व के बारे में जानना चाहती हो।

हमारे बिहार में छठ पर्व का बड़ा ही महत्व है। यहाँ गाँव या शहर हर क्षेत्र में छठ व्रत धूम-धाम से मनाया जाता है। यह व्रत कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष को षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। लगभग हर घर में छठ पूजा की जाती है। लोग कई तरह की मन्नतें छठी मइया से माँगते हैं तथा पूरी होने पर व्रत रखते हैं।

में सुनाइए ।

कार्तिक महीने के प्रारंभ से ही लोग इस पावन पर्व की तैयारियों में लग जाते हैं। इस अवसर पर लोग घरों एवं गलियों की सफ़ाई करते हैं। घाटों एवं घाट तक जाने वाले रास्ते की भी साफ़-सफ़ाई की जाती है। चारों ओर छठ के गीत सुनाई देने लगते हैं। लगभग सभी परदेशी गाँव आ जाते हैं। यह व्रत चार दिनों तक चलता है, जिसमें सभी वर्ग के स्त्री-पुरुष व्रत रखते हैं। इस व्रत में जात-पात का भेद-भाव बिल्कुल नहीं रह जाता है।

यह व्रत नहाय-खाय से प्रारंभ होता है। नहाय-खाय के दूसरे दिन खरना होता है। इस दिन व्रती दिनभर उपवास रखने के बाद रात्रि में रोटी और खीर से खरना करते हैं तथा प्रसाद बाँटते हैं। फिर षष्ठी के दिन लोग नहा-धोकर नए कपड़े पहन छठ करने के लिए घाट पर जाते हैं। यहाँ व्रती नदी या तालाब के तट पर डूबते हुए सूर्य को फल तथा पकवान से अर्घ्य देकर पूजन करते हैं।

वापस घर आकर शाम को आँगन में ईख तथा ठेकुआ से कोसी भर कर छठ का गीत गाकर आरती करते हैं।

सुबह
हैं। यह अर्घ
ग्रहण करते
इस प्र
छठ पर्व की
ज़रूर करना
तुम्हार

हर्षोल
अर्घ
अर्घ्य
षष्ठी
पारण
व्रती
प्रयास

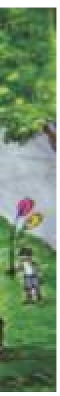

सुबह होने पर लोग पुनः घाट पर जाकर उगते हुए सूर्य का पूजन कर अर्घ देते हैं। यह अर्घ गाय के कच्चे दूध तथा घी से दिया जाता है। घर आकर सभी व्रती प्रसाद ग्रहण करते हैं तथा प्रसाद बाँटकर पारण करते हैं।

इस प्रकार हमारे बिहार में छठ पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। मैं तुम्हें छठ पर्व की कुछ फोटो भेज रही हूँ। अगले छठ में तुम हमारे गाँव आने का प्रयास ज़रूर करना।

तुम्हारी सहेली
सलोनी

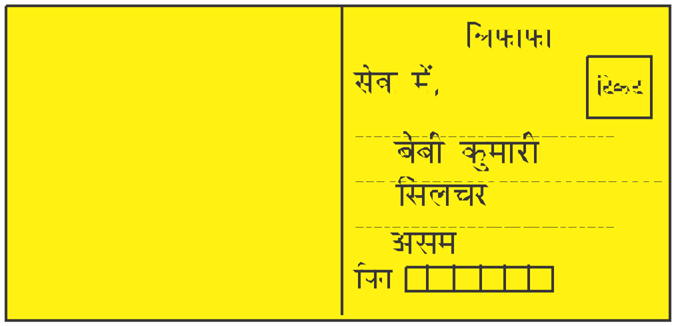

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

हर्षोल्लास	–	खुशी–खुशी से, हर्ष और उल्लास के साथ
अर्घ	–	पूजन के लिए दूध और जल अर्पित करना
अर्घ्य	–	अर्पित की जाने वाली सामग्री
षष्ठी	–	छठा
पारण	–	उपवास के समाप्त होते अन्न ग्रहण कर व्रत तोड़ना
व्रती	–	व्रत करने वाला या वाली
प्रयास	–	कोशिश करना

अभ्यास

बातें यहाँ-वहाँ की

1. सलोनी ने बेबी को चिट्ठी लिखकर छठ पर्व के बारे में बताया। किसी दूर बैठे व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचाने के और कौन-कौन से साधन हो सकते हैं?
2. टेलीफोन/मोबाइल और चिट्ठी के द्वारा अपनी बात बताने में क्या अंतर होगा?
3. आप छठ पर्व कैसे मनाते हैं?
4. केरवा [illegible] जे फरे [illegible] ला घवद से [illegible] ....। (छठ पर गाए जाने वाले इस गीत को आप सभी ने सुना होगा। छठ पर्व पर गाए जाने वाले अन्य गीत सुनाइए।)
5. क्या आपने कभी अपने मित्र को पत्र लिखा है? उसमें क्या-क्या लिखा था?

बात चिट्ठी की

1. छठ कब और क्यों मनाया जाता है?
2. छठ पर्व कितने दिनों का होता है? उन दिनों क्या-क्या किया जाता है?
3. घाट पर जाने से पहले क्या-क्या तैयारियाँ की जाती हैं?
4. छठ पर्व पर प्रसाद में कौन-कौन सी चीज़ें होती हैं? उनकी एक सूची बनाइए।

आपकी बातें

1. आपको कौन-सा त्योहार अच्छा लगता है और क्यों?
2. छठ पर्व की कौन-सी बात आपको सबसे अच्छी लगती है और क्यों?
3. भारत के अन्य किन्हीं तीन राज्यों के प्रसिद्ध त्योहारों की सूची बनाइए और बताइए कि इस अवसर पर क्या-क्या होता है और कौन-कौन से पकवान बनाए जाते हैं?

राज्यों के नाम	प्रसिद्ध त्योहार	क्या करते हैं	मुख्य पकवान/व्यंजन

चिट्ठी-पत्री

1. पता कीजिए कि संदेश भेजने के लिए पहले किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाता था?
2. हरकारों (पत्र ले जानेवाले) को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा?
3. चिट्ठी के लिफाफे या पोस्टकार्ड पर क्या-क्या लिखा जाता है और क्यों?
4. आप भी नीचे दिए गए लिफाफे के आगे-पीछे पाने वाले और भेजने वाले से जुड़ी जानकारी लिखिए –

   मान लीजिए कि चिट्ठी भेजने वाले आप हैं और चिट्ठी पाने वाला आपका मित्र!

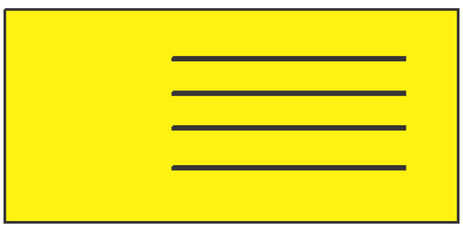
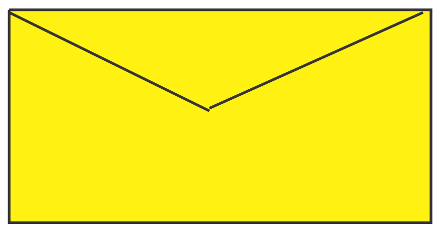

5. **आप अपने घर में कोई पुरानी चिट्ठी ढूँढ़िए। उसे देखिए और नीचे दिए गए सवालों के जवाब लिखिए–**

   (क) पत्र किसने लिखा?

   (ख) किसे लिखा ?

   (ग) किस तारीख को लिखा?

   (घ) यह पत्र किस डाकखाने में और किस तारीख को पहुँचा?

   (ङ) यह उत्तर आपको कैसे पता चला?

6. **चिट्ठी भेजने के लिए आमतौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफा इस्तेमाल किया जाता है। इनका मूल्य पता करके लिखिए –**

- पोस्टकार्ड ------------------
- अंतर्देशीय पत्र ------------------
- लिफाफा ------------------

बात पते की

1. 'पिन'(PIN) भारत में शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर का छोटा रूप है। किसी भी जगह का पिनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास मतलब होता है, जैसे–
   - पहला अंक बताता है कि यह पिनकोड किस राज्य का है–बिहार, दिल्ली, उड़ीसा या फिर किसी और राज्य का।
   - दूसरे दो अंक यह बताते हैं कि राज्य के किस उपक्षेत्र का कोड है।
   - अगले तीन अंक बताते हैं कि यह ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।
2. आप जहाँ रहते हैं वहाँ का पिन कोड क्या है?
3. आपके स्कूल का पिन कोड क्या है?
4. अपने किसी रिश्तेदार का पता पिन कोड के साथ लिखिए–

....

....

भाषा के नियम

1. **सही कारक-चिह्नों से वाक्य पूरे कीजिए –**

का, में, ने, को, के लिए, से, पर

(क) हमारे बिहार -------------- छठ पर्व ------------ बड़ा महत्व है।

(ख) मौसी जी -------------- प्रसाद ले आओ।

(ग) मुन्ना ने सूप -------------- चावल फटका।

(घ) सलोनी -------------- बेबी -------------- चिट्ठी लिखी।

(ङ) सभी बच्चे छत -------------- बैठ गए।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया शब्दों पर घेरा लगाइए–**

(क) लगभग हर घर में पूजा की जाती है।

(ख) लगभग सभी परदेसी गाँव आ जाते हैं।

(ग) इसमें प्रसाद भी वितरित करते हैं।

(घ) चिट्ठी का जवाब जरूर लिखना।

3. **हर्ष** + **उल्लास** से **'हर्षोल्लास'** शब्द बना है । आप भी नए शब्द बनाइए –

(क) महा । उत्सव : ------------------------

(ख) आनंद उत्सव : ------------------------

(ग) सूर्य । उदय : ------------------------

(घ) चंद्र उदय : ------------------------

4. इनके मतलब समझाइए –

- शुक्ल पक्ष – --
- षष्ठी तिथि – --
- अर्घ्य देना – --
- व्रती – --
- कार्तिक महीना – --
- परदेसी – --
- मन्नत – --

5. सही उत्तर पर (✓) लगाइए –

(क) प्रसन्नता' का अर्थ है – मज़ा, खुशी, दुख

(ख) 'तैयारी' का बहुवचन रूप है – तैयारीं, तैयारे, तैयारियाँ

(ग) 'पुरुष' का बहुवचन रूप है – पुरुषें, पुरुष, पुरुषों

(घ) 'घर में' का बहुवचन रूप है – घर में, घर, घरों में

(ङ) 'रात्रि' का विलोम शब्द है – रात, दिवस, उजाला

कुछ करने के लिए

1. छठ पर्व पर गाए जाने वाले कुछ गीतों को इकट्ठा करके लिखिए और अपने साथियों के साथ गाइए ।
2. माँ जब बच्चे को सुलाती है या जब धान की फसल कटती है तो अक्सर कौन-से गीत गाए जाते हैं? पता करके लिखिए और गाइए ।

***

16. मरता क्या न करता

केरल के एक गाँव में विष्णु पोट्टि रहते थे। विष्णु पोट्टि थे तो बहुत गरीब लेकिन उन्हें दानी कहलाने का शौक था। वे रोज़ दो-एक लोगों को अपने घर खाना खिलाने ले आते। चाहे घर में खाने को पर्याप्त हो या नहीं; दूसरों को खाना खिलाना वे अपना धर्म समझते थे। उनकी पत्नी लक्ष्मी को उनकी यह आदत पसंद नहीं थी। पर वह किसी न किसी तरह घर चलाया करती थी। पड़ोसियों से कभी चावल उधार लाती तो कभी सब्ज़ी। एक दिन उसने सोचा कि इस तरह कब तक काम चलेगा? पड़ोसी भी उससे नाराज़ होते। उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि वह सचमुच इतनी गरीब है, क्योंकि वे रोज़ मेहमानों को आते और खाते देखते थे। बेचारी की मदद करनेवाला कोई नहीं था। कितनी ही बार तो वह कई-कई दिनों तक भूखी रह जाती। जब उससे और नहीं सहा गया तो उसने पति से बात करने का फैसला किया। उसने

विष्णु से कहा, "आप हर रोज़ किसी न किसी को ले आते हैं। अपने भोजन में से दूसरों को खिलाना अच्छी बात है। पर आपने कभी यह भी पूछा कि खाना पूरा भी पड़ेगा या नहीं? हम ठहरे गरीब! जो रूखा-सूखा जुटता भी है, वह हम दोनों के पेट भरने को काफ़ी नहीं होता। फिर दूसरों के लिए रोज़-रोज़ कहाँ से आएगा? मैं अपना हिस्सा उनको खिला देती हूँ, और खुद भूखी रह जाती हूँ। मुझसे अब और नहीं सहा जाता। अब लोगों को घर बुलाना बंद कर दें।"

लेकिन विष्णु पर कोई असर नहीं हुआ। अगले दिन रोज़ की तरह वे दोपहर को दो अजनबियों के साथ भोजन के लिए घर पहुँचे। लक्ष्मी ने उन्हें दूर से आते देखा तो घबरा गई। उसने सोचा कि आज फिर वह भूखी रह जाएगी। लेकिन अचानक उसे एक उपाय सूझा।

विष्णु ने मेहमानों से हाथ जोड़कर कहा, "आप बैठिए, मैं अभी मुँह-हाथ धोकर आता हूँ।"

उनके जाने के बाद लक्ष्मी धान कूटने का मूसल उठा लाई और उसे दीवार के सहारे टिका दिया। उसके बाद उसने दीप जलाकर मूसल के आगे रख दिया। मूसल के चारों ओर दो-चार फूल भी डाल दिए और उसके सामने हाथ जोड़कर बैठ गई। वह ऐसी जगह बैठी जहाँ से अतिथि उसे देख सकें। अतिथियों ने उसे देखा तो हैरान रह गए। मूसल की पूजा करते उन्होंने आज तक किसी को नहीं देखा था।

दोनों आकर लक्ष्मी के पास खड़े हो गए। वह ध्यानमग्न बैठी थी। उसने अपनी आँखें खोलीं और सिर घुमाया तो उन दोनों को खड़ा पाया। एक ने पूछा, "आप मूसल की पूजा क्यों कर रही हैं?"

लक्ष्मी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "मैं आपको कैसे बताऊँ? लेकिन आपको तो बताना ही पड़ेगा, क्योंकि इसका संबंध भी आप ही से है।"

अब तो वे दोनों भेद जानने के लिए लक्ष्मी के पीछे पड़ गए।

लक्ष्मी ने कहा, "पहले आप वादा कीजिए कि मेरे पति को कुछ नहीं बताएँगे।"

उन दोनों ने वायदा किया।

लक्ष्मी ने कहा, "मेरे पति दानी आदमी हैं। वे मेहमानों को घर बुलाकर खाना खिलाते हैं और खिलाने के बाद उन्हें इसी मूसल से खूब पीटते हैं। कहते हैं, यही उनका धर्म है। मैं खाना तो बनाती हूँ। लेकिन मारने-पीटने से मेरा कोई संबंध नहीं। मैं मूसल की पूजा इसलिए कर रही हूँ कि मुझे पाप न लगे।"

अब तो अतिथि बहुत चकराए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और इशारों ही इशारों में कहा कि यहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही भलाई है। दोनों पीछे के दरवाज़े से निकल भागे। तभी विष्णु पोट्टि अंदर आया। उसने लक्ष्मी से पूछा कि मेहमान कहाँ चले गए? लक्ष्मी ने दुख से कहा, "वे मुझसे यह मूसल माँग रहे थे। मैंने कहा, "मेरे घर में एक ही मूसल है, मैं नहीं दूँगी। बस, वे नाराज़ होकर चले गए।"

पोट्टि गुस्से से चिल्लाया, "तुमने मेरे मेहमानों का अपमान कर दिया। लाओ मूसल, मैं उन्हें दे आता हूँ।"

पत्नी के हाथ से मूसल छीनकर वह अतिथियों के पीछे दौड़ा। दोनों काफ़ी आगे निकल गए थे। उन्होंने विष्णु पोट्टि को गुस्से में मूसल उठाए पीछे आते देखा तो बोले, "देखो, वह आ रहा है हमें मारने।" दोनों अपनी जान बचाकर भागे। विष्णु पोट्टि उन्हें पकड़ नहीं सका तो लौट गया।

गाँववालों ने उसे मेहमानों के पीछे मूसल उठाए भागते देखा तो चारों ओर यह बात फैला दी कि विष्णु पोट्टि अपने मेहमानों को घर ले जाकर उन्हें मूसल से मारता है। उसके बाद कोई भी खाने के लिए उसके घर जाने को तैयार न होता।

विष्णु पोट्टि को पता नहीं चला कि यह लक्ष्मी की चाल थी।

लक्ष्मी को भी फिर कभी भूखा नहीं रहना पड़ा।

—के॰ शिव कुमार

लोक कथा

'मरता

सामान

आप

1. तीनों

और

2. तीनों

मज़ेद

कथा में से

1. लक्ष्मी

2. लक्ष्मी

3. लक्ष्मी

4. दोपहर

5. लक्ष्मी

सोच समझ

1. सवाल

(क) लक्ष्म

अभ्यास

लोक कथाओं की दुनिया

'मरता क्या न करता' शीर्षक कहानी केरल की लोक कथा है। लोक कथाएँ सामान्य जीवन में कही गई या प्रचलित कहानियाँ होती हैं।

आप बिहार की लोककथाएँ 'टिपटिपवा' और 'उपकार का बदला' पढ़ चुके हैं।

1. तीनों लोककथाओं में से आपको कौन-सी लोककथा सबसे ज़्यादा पसंद आई और क्यों?
2. तीनों लोक कथाओं में से एक-एक घटना के बारे में लिखिए जो आपको बहुत मज़ेदार लगी हो।

मज़ेदार घटना

टिपटिपवा	उपकार का बदला	मरता क्या न करता

कथा में से

1. लक्ष्मी को विष्णु पोट्टि की कौन-सी आदत पसंद नहीं थी?
2. लक्ष्मी के पड़ोसी उससे क्यों नाराज़ रहते थे?
3. लक्ष्मी ने विष्णु पोट्टि को क्या समझाया?
4. दोपहर को दो अजनबियों को देख लक्ष्मी ने क्या किया?
5. लक्ष्मी ने अतिथियों से ऐसा क्या कहा कि वे भाग खड़े हुए?

सोच समझकर

1. सवालों को पढ़िए और सोच समझकर सही जवाब पर ✓ लगाइए –

(क) लक्ष्मी दो अजनबियों को देख घबरा गई, क्योंकि–

- वह उन्हें नहीं जानती थी। ☐
- वे खतरनाक थे। ☐
- उसने सोचा कि आज फिर उन्हें खाना खिलाना पड़ेगा। ☐
- उसके घर अनाज का एक दाना न था। ☐

(ख) विष्णु पोट्टि ने ऐसा क्यों कहा कि उसके मेहमानों का अपमान हुआ है।

- लक्ष्मी ने उन्हें मूसल नहीं दिया।
- मेहमान बिना खाए चले गए ।
- लक्ष्मी मेहमानों पर नाराज हो गई थीं।
- मेहमान की खातिरदारी अच्छी तरह नहीं हुई थी।

(ग) लक्ष्मी को फिर कभी भूखा नहीं रहना पड़ा, क्योंकि -

- गाँव वाले जान गए थे कि लक्ष्मी गरीब है।
- यह खबर फैल गई थी कि विष्णु पोट्टि मेहमानों को मूसल से मारता है।
- लक्ष्मी के घर अब अनाज की कमी नहीं थी।
- लक्ष्मी ने अतिथियों को भगाना शुरू कर दिया था।

(घ) घर चलाने का मतलब है -

- घर बनाना
- घर की सफ़ाई करना
- रोटी, कपड़ा और मकान का उचित प्रबंध करना
- घर को सजाना

2. अगर आप लक्ष्मी की जगह होते तो क्या उपाय करते?
3. आप अपने अतिथियों के स्वागत में अपने माता-पिता की मदद कैसे करते हैं?
4. दानी बनने के लिए विष्णु पोट्टि क्या करता था? क्या उसका यह तरीका ठीक था? कारण बताइए।

दाल-भात में मूसल

'अरे जाओ, अपना काम करो। क्यों दाल-भात में मूसल बन रहे हो?' इस वाक्य में दाल-भात में मूसल बनना एक मुहावरा है जिसका अर्थ है-बिना मतलब दूसरों के कामों या बातों में दखल देना।

मूसल की तरह रसोईघर से जुड़ी ऐसी कई चीज़ें हैं जिनसे मुहावरे / लोकोक्तियाँ बनी हैं।

जैसे –

- थाली का बैंगन
- बिन पेंदे का लोटा
- जले पर नमक छिड़कना
- पाँचों अँगुलियाँ घी में होना
- आटे–दाल का भाव मालूम होना
- जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना

इन मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग वाक्यों में करते हुए अर्थ समझाइए।

2. मूसल का प्रयोग धान कूटने के लिए किया जाता है। बताइए, इन कामों के लिए किस चीज़ का प्रयोग किया जाता है –

- चारा काटने के लिए ....
- खेत में बीज बोने के बाद ज़मीन समतल करने के लिए ....
- घास काटने के लिए ....
- सुपारी काटने के लिए ....
- पानी उलीचने के लिए ....

आदतों की दुनिया

1. विष्णु पोट्टि को यह आदत थी कि वह रोज़ दो–एक लोगों को अपने घर खाना खिलाने ले आते थे।

किन्हीं तीन व्यक्तियों के नाम, आदत लिखकर बताएँ कि वह आदत आपको पसंद है या नहीं –

व्यक्ति का नाम	आदत	पसंद है/नहीं है

2. आपकी भी कुछ आदतें होंगी। अपनी आदतों पर ✓ लगाइए –

- हाथ धोकर खाना खाना ☐
- नहाते समय गाना गाना ☐
- बस में दौड़ते हुए चढ़ना ☐
- देर रात तक जागना ☐
- सुबह उठने में आना-कानी करना ☐
- नाक में अँगुली डालना ☐
- अँगूठा चूसना ☐
- खेलने से पहले पढ़ाई करना ☐
- रास्ते में पड़ी हुई चीज़ पर ठोकर मारना ☐
- धूल उड़ाना ☐
- फलों को धोकर खाना ☐
- पेड़ों की पत्तियाँ और फूल तोड़ना ☐

3. आप ऊपर की किन आदतों को अच्छा और किन आदतों को खराब मानते हैं? क्यों?

भाषा के रंग

1. नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए और सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए –

विष्णु पोटि्ट, छुट्टी, लिट्टी, इकट्ठा, चिट्ठी, लट्ठ, गड्ढा, गट्ठर

- भोला ने अपना ------------ उठाया।
- स्कूल की ------------ हो गई।
- आगे एक गहरा ------------ है।
- ------------------ को दानी कहलाने का शौक था।
- लक्ष्मी ने ------------------ -चोखा बनाना सीखा।
- डाकिया ------------------ लाया था।
- उसने घास का ------------------ उठाया।
- सभी लोग गाँधी मैदान में ------------------ हो गए।

14 (नि:शुल्क)

ब मानते हैं?

द से वाक्य

र

2. वाक्य में मोटे शब्दों की जगह ऐसे शब्द का प्रयोग करके वाक्य को दुबारा लिखिए जिससे अर्थ न बदले –

(i) दोपहर को दो **अजनबी** आए।

(ii) बस वे **नाराज़** होकर चले गए।

(iii) वह ऐसी जगह बैठ गई जहाँ से **अतिथि** उसे देख सकें।

(iv) अब तो अतिथि बहुत **चकराए**।

(v) इसका **संबंध** भी आप ही से है।

----

3. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए–

दोपहर, तिराहा, चारपाई, चौगुना, चौराहा

क्या आपको इन शब्दों में कोई खास बात नज़र आती है? इन सभी शब्दों का पहला अक्षर संख्या की ओर संकेत करता है। यानी शब्द संख्यावाची है। आप भी ऐसे कोई दो नए शब्द लिखिए और इन शब्दों में छिपी संख्या बताइए –

- दोपहर, दोबारा, दोपहिया
- तिराहा, -------------, ------------
- चौराहा, -------------, ------------
- चारपाई, -------------, ------------
- चौगुना, -------------, ------------
- छमाही, -------------, ------------

आपके सवाल

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और कोई पाँच सवाल बनाइए–

विष्णु पोद्दार गुस्से से चिल्लाया, "तुमने मेरे मेहमानों का अपमान कर दिया। लाओ मूसल, मैं उन्हें दे आता हूँ" पत्नी के हाथ से मूसल छीनकर वह

अतिथियों के पीछे दौड़े। दोनों काफ़ी आगे निकल गए थे। उन्होंने विष्णु पोट्टि को गुस्से में मूसल उठाए पीछे आते देखा तो बोले, "देखो, वह आ रहा है हमें मारने!" दोनों अपनी जान बचाकर भागे।

सवाल

1. --
2. --
3. --
4. --
5. --

कुछ करने के लिए

1. 'मरता क्या न करता' शीर्षक कहानी की जो घटना आपको सबसे मज़ेदार लगी हो, उसका एक चित्र बनाइए।
2. इस कहानी का मंचन कीजिए।
3. लक्ष्मी की चतुराई के बारे में बताते हुए अपनी मौसी जी को पत्र लिखिए।

14 (**नि:शुल्क**)

विष्णु पोट्टि

रहा है हमें

गज़ेदार

लिखिए।

4. आप जानते हैं कि 'मरता क्या न करता' केरल की लोककथा है। केरल राज्य भारत के दक्षिण में है। नीचे दिए गए मानचित्र में 'केरल' राज्य को मनपसंद रंग से भरिए और अपने शिक्षक या किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से केरल के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए तालिका में लिखिए–

केरल के बारे में	
राजधानी	-------------------------
भाषा	-------------------------
खास व्यंजन	-------------------------
खास फसल	-------------------------
खास पेड़-पौधे	-------------------------
खास दर्शनीय स्थल	-------------------------

17. बिना जड़ का पेड़

राजा के दरबार में एक व्यापारी संदूक के साथ पहुँचा। उसने गर्व से कहा, "महाराज, मैं व्यापारी हूँ और बिना बीज एवं पानी के पेड़ उगाता हूँ। आपके लिए मैं एक अद्भुत उपहार लाया हूँ। आपके दरबार में एक-से-एक ज्ञानी-ध्यानी हैं। इसलिए पहले मुझे कोई यह बताए कि इस संदूक में क्या है। अगर बता देगा तो आपके यहाँ चाकरी करने को तैयार हूँ।"

सभासद पंडितों, पुरोहितों और ज्योतिषियों की ओर देखने लगे, लेकिन उन लोगों ने सिर झुका लिए।

सभा में गोनू झा भी उपस्थित थे। उन्हें उसकी चुनौती स्वीकार करना आवश्यक लगा अन्यथा दरबार की जग-हँसाई होती। गोनू झा ने विश्वासपूर्वक कहा, "मैं बता सकता हूँ कि संदूक में क्या है, लेकिन इसके लिए मुझे रात भर का समय चाहिए और व्यापारी को संदूक के साथ मेरे यहाँ ठहरना होगा। संदूक बदला न जाए, इसकी निगरानी के लिए हम रातभर जगे रहेंगे और व्यापारी चाहे तो पहरेदार भी रखवा सकते हैं।" सभी मान गए और व्यापारी गोनू झा के यहाँ चला गया।

रातभर दोनों संदूक की रखवाली करते रहे। रात काटनी थी, इसलिए किस्सा-कहानी भी चलती रही। बातचीत के क्रम में गोनू झा ने कहा, "भाई, कुछ दिन पूर्व मुझे एक

व्यापारी मिला था, उसने भी यही कहा था कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगाता हूँ। पेड़ों में भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, वह भी रात में। क्या आप भी रात में पेड़ उगाकर भाँति-भाँति के फूल खिला सकते हैं?"

उसने अहंकार से कहा, "क्यों नहीं! मेरे पेड़ रात में ही अच्छे लगते हैं और उनके रंग-बिरंगे फूल देखते ही बनते हैं।" यह सुनते ही गोनू झा की आँखों में चमक आ गई और वे निश्चिंत हो गए।

दूसरे दिन दोनों दरबार में उपस्थित हुए। गोनू झा ने जेब से कुछ आतिशबाजी निकालकर छोड़ी।

सभासद झुँझला गए। महाराज की भी आँखें लाल-पीली हो गईं और कहा, "गोनू झा, यह क्या बेवक्त की शहनाई बजा दी। सभा का सामान्य शिष्टाचार भी भूल गए?"

गोनू झा ने वातावरण को सहज करते हुए कहा, "महाराज, सर्वप्रथम धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन यह मेरी मजबूरी थी । इसी में व्यापारी भाई के रहस्यमय प्रश्न का उत्तर है। इसमें ही बिना जड़ के भाँति-भाँति के रंगों में फूल खिलते हैं।"

व्यापारी अवाक् रह गया । उसने सहमते हुए कहा, "महाराज, इन्होंने मेरे गूढ़ प्रश्न का उत्तर दे दिया।"

फिर उसने विस्मयपूर्वक गोनू झा से पूछा, "आपने कैसे जाना कि इसमें आतिशबाजी ही है?"

गोनू झा ने सहजता से कहा, "व्यापारी, जब आपने यह कहा कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगते हैं और उनमें भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, तब तक तो मुझे संदेह रहा, परंतु मेरे पूछने पर यह कहा कि रात ही में आपकी यह फसल अच्छी लगती है, तब जरा भी संशय नहीं रहा कि इसमें आतिशबाजी छोड़ अन्य सामान होगा।"

व्यापारी मायूस हो गया। राजा ने कहा, "व्यापारी, आपको दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। आप यहाँ रहने के लिए स्वतंत्र हैं, पर अपना कमाल रात में दिखाकर लोगों का मनोरंजन कीजिएगा। अगर प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा तो पुरस्कार भी पाइएगा, पर अभी पुरस्कार के हकदार गोनू झा ही हैं।"

-वीरेन्द्र झा

आएँ सीखें गुलाब के फूल बनाना

गुलाब के फूल तो आप सबने देखे ही हैं। कई रंगों और कई आकार के सुन्दर गुलाब किसे अच्छे नहीं लगते? इस बार हम यहाँ गुलाब के फूल बनाने के बारे में बता रहे हैं। इसके लिए रंगीन कागज़, परकार, पेंसिल, गोंद, कैंची, थोड़ा पतला और थोड़ा मोटा तार, आलपिन इत्यादि का जुगाड़ कर लीजिए।

…लों मेरे गूढ़

… कि इसमें

… कि बिना
…तब तक तो
…सल अच्छी
…अन्य सामान

… की ज़रूरत
…खाकर लोगों
…ा, पर अभी

…द्र झा

1. सबसे पहले कागज़ पर एक गोला बनाकर उसे काट लीजिए। अलग-अलग आकार के ऐसे तीन-चार गोले काट लें।

जैसे-एक ढाई इंच व्यास का, दूसरा दो इंच व्यास का, तीसरा डेढ़ इंच व्यास का और चौथा एक इंच व्यास का।

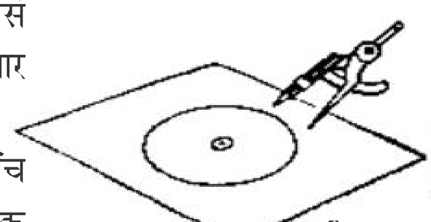
चित्र-1

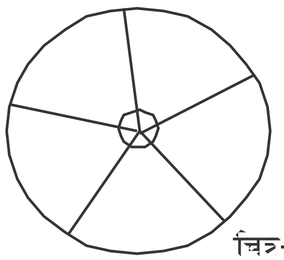
चित्र-2

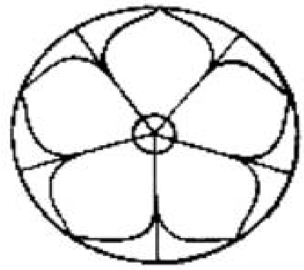
चित्र-3

2. काटे हुए गोलों को पेंसिल से पाँच बराबर भागों में बाँट लें।

3. अब चित्र तीन की तरह गोले पर पँखुड़ियों की डिज़ाइन बना लें। इसी तरह सभी गोलों पर डिज़ाइन बना लें।

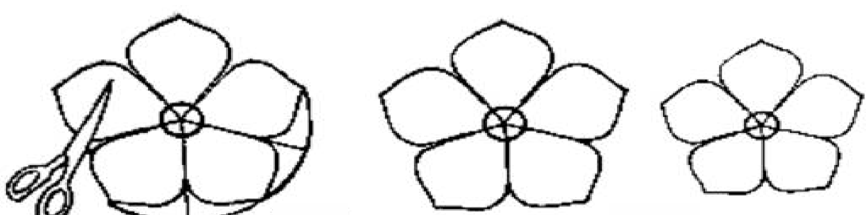
चित्र-4

4. इन गोलों में से पँखुड़ियों के ऊपर का हिस्सा काटकर अलग कर दें। इस बात का ध्यान रखें कि बीच के छोटे गोले से थोड़ी दूर तक पँखुड़ियाँ जुड़ी रहनी चाहिए।

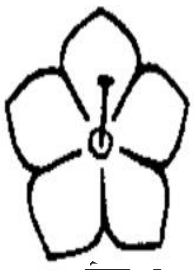

चित्र-5

5. इसी तरह से सभी पँखुड़ियों को काट लें। फिर सभी अलग-अलग आकार की पँखुड़ियों को एक के ऊपर एक रख लें। सबसे छोटी पँखुड़ी सबसे ऊपर और सबसे बड़ी सबसे नीचे रखें। बीच वाले छोटे गोले में एक तार का टुकड़ा या आलपिन पिरो लें।

6. इस तरह फूल तो बन जाएगा अब बनाना है पत्तियाँ। चित्र-6 में दिखाई गई पत्तियों की डिज़ाइन की तरह पत्तियाँ कागज़ से काट लें।

चित्र-6

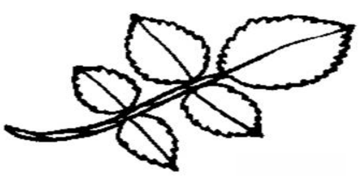

चित्र-7

7. पाँच-पाँच पत्तियों को एक तार में चिपका लें।

8. फूल तो पहले बना ही लिया था। फूल के बीचोंबीच जो तार पिरोया था उसे एक थोड़े मोटे तार के साथ लपेटकर अच्छे से कस दें। फिर इसी तार से पत्तियों को भी लपेट दें। अंत में इस तार पर हरे रंग का कागज़ गोंद लगाकर चिपका दें।

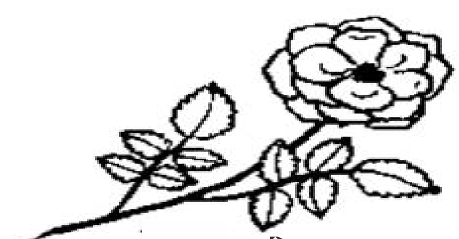

चित्र-8

आपकी क

गोनू

हैं:

उदाह
तारों

- काले
- सूरज
- तेज
- धीमे

किस्से कह

1. गोनू इ
भरे वि

2. 'बिना

आपकी कल्पना

गोनू झा ने आतिशबाज़ी को पेड़ कहा है। आप इनको क्या कह सकते हैं:

उदाहरण–
तारों का फूल

- काले बादलों को ....
- सूरज को ....
- तेज चलने वाले आदमी को ....
- धीमे चलने वाले आदमी को ....

किस्से कहानियाँ

1. गोनू झा की चतुराई भरी कहानी आपने पढ़ी। आप बीरबल, तेनालीराम के चतुराई भरे किस्से पढ़िए और अपने वर्ग में सुनाइए।

2. 'बिना जड़ का पेड़' कहानी को अपने शब्दों में सुनाइए।